Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 6.280, Volume 12, No. 01, January-March 2022, pp. 195-200

पर्यावरण शिक्षा को माध्यमिक पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से जोड़ने से विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ. कल्पना पारीक*

प्रस्तावना

मानव जाति का विकास शिक्षा के माध्यम से ही संभव हुआ है। शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है। समस्त ज्ञान शिक्षा के माध्यम से ही प्रसारित किया जा सकता है। वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को दूर करने के लिये पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता सभी विकसित एवं विकासशील देशों के द्वारा महसूस की जा रही है। विश्व को पर्यावरण संकट से उभारने के लिए पर्यावरणीय जागरूकता की आवश्यकता है।

वर्तमान समय में मानव अपनी भौतिक सुख–सुविधाओं की पूर्ति के लिए पर्यावरण को नुकसान पहुॅचा रहा है। पिछले लगभग 100 वर्षो में जब से मनुष्य नें प्रकृति पर विजय प्राप्त करने के लिए अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियां अर्जित करने का प्रयास किया है तथा सुख–सुविधाओं की बढ़ोतरी के लिए साधन जुटाए तभी से प्रकृति का सामान्य रूप विखण्डित होने लगा है, वन कटने लगे, उपजाऊ भूमि पर आवास बनने लगे, बड़े–बड़े जंगलों को साफ कर बांधों की योजना बनी और ऐसे कई प्रयोग किये गये जो मानव प्रकृति के अनुकूल नहीं है। जिसके कारण प्राकृतिक साधनों की उपलब्धता में कमी आने लगी और धीरे–धीरे वायु, जल, भूमि आदि जो मानव जीवन के लिए आवश्यक है प्रदूषित होने लगे और चिंता के कारण बन गये।

पर्यावरणीय समस्याओं के कारण में मुख्य कारण शिक्षा भी है। शिक्षा के द्वारा ही जो नई–नई तकनीकी , वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रयोग हुआ है। जिसके कारण प्रकृति का ह्रास हुआ है। शिक्षा के द्वारा उत्पन्न समस्या को शिक्षा के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है। जिसके लिए माध्यमिक स्तर से ही पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा के द्वारा पर्यावरण जाकरूकता का प्रयास किया जाना चाहिये। जिससे मानव अपने शिक्षा के प्रारंभिक स्तरों में ही पर्यावरण के प्रति जागरूक हो सके तथा अपनी शिक्षा का उपयोग पर्यावरण को हानि पहूॅचाने में नहीं अपितु प्रकृति का संरक्षण करने में कर सकें।

पर्यावरण जागरूकता एक विषय

संयुक्त राज्य अमेरिका ने 1961 में पर्यावरण शिक्षा को एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्वीकार किया। 1948 में डॉ. राधाकृष्णन विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग तथा 1952–53 में मुदालिया माध्यमिक शिक्षा आयोग ने इस विषय को माध्यमिक स्तर तक अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाये जाने की अनुशंसा की, अखिल भारतीय स्तर पर माध्यमिक शिक्षा परिषद् तथा बाद में ''राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद् '' ने पर्यावरण विषय, अध्ययन का पाठ्यक्रम, पाठ्य–पुस्तकें, सन्दर्शिकाऍ तथा उन्नत अनुदेशन सामग्री तैयार कर उन्हें सभी राज्यों को प्रसारित किया।

* प्रोफेसर, एस.एस.जी पारीक पी.जी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, जयपुर, राजस्थान।

बालकों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना अत्यन्त आवश्यक है। अतः बच्चों में जागरूकता प्रारंभिक स्तर से ही विकसित करनी चाहिये। इस प्रकार पर्यावरण जागरूकता का अर्थ है :–

- भौतिक पर्यावरण, पौधे, जानवरों तथा मनुष्यों में पारस्परिक संबंध व निर्भरता को पहचानना और अभिवृद्धि तथा विकास को समझना।
- सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विकास हेतु व्यक्तिगत रूप में या सामुहिक रूप में क्रियाओं को आरंभ करना।
- प्राकृतिक स्त्रोत के उपयोग के लिए निर्णय लेना तथा उनके महत्व को समझना और सामाजिक प्रयासों में सहायता करना जिससे उनका विशिष्ट उपयोग हो सकें ।
- पर्यावरण के अन्तर्गत मानवीय सामग्री, स्थान, समय व स्त्रोतों को पहचानना जिससे सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास एवं अभिवृद्धि की जा सके।

अतः वर्तमान समय में इस बात की आवश्यकता है कि विद्यार्थियों को न केवल पुस्तकीय ज्ञान द्वारा सिंचित किया जाए बल्कि उनके पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से पर्यावरण विषय को जोड़कर पर्यावरण शिक्षा का ज्ञान कराया जाए।

समस्या अध्ययन की आवश्यकता

पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता अनेक कारणों से अनुभव की गई है। आज मानव जितनी उन्नति कर रहा है वह शिक्षा के कारण ही संभव है। शिक्षा द्वारा शिक्षित होकर मानव नई–नई तकनीकों, वैज्ञानिक अविष्कारों का उपयोग करके नये उद्योग धन्धों तथा कल–कारखानों का विकास कर रहा है परन्तु एक शिक्षित व्यक्ति में आज भी पर्यावरण के प्रति जागरूकता की कमी नजर आ रही है। जिसके कारण पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता अनुभव हुई है।

- **हमारा जीवन पर्यावरण की गुणवत्ता से सीधे प्रभावित होता है :–** अर्थात जैसा हम पर्यावरण को रखेगें या बनाएंगें वह सीधे रूप से हमारे जीवन को प्रभावित करेगा।
- **पर्यावरण शिक्षा हमारे दैनिक जीवन से जुड़ी है –** पर्यावरण शिक्षा से हम अपने रोजमर्रा के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करतें है जैसे कृषि, वायु, मौसम, ऊर्जा, प्रदूषण आदि आते हैं। पर्यावरण शिक्षा हमको, हमारे जीवन को अधिक अच्छी तरह समझने तथा उसके अनुसार हमारी गतिविधियों को नियंत्रित करने में सहायक होती है।
- **पर्यावरण शिक्षा रूचिकर है :–** पर्यावरण शिक्षा अक्सर छात्र तथा शिक्षकों को अभिप्रेरित करती है।
- **पर्यावरण शिक्षा व्यक्तिगत जिम्मेदारी की शिक्षा देती है –** पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से हमको पता चलता है कि कौन– कौनसे हमारे कार्य पर्यावरण को खराब करते है तथा कौनसे कार्य उसे सुधारने में सहायक है।
- **पर्यावरण शिक्षा लोगों को सक्रिय रहकर पर्यावरण सुधारने के लिए प्रेरित करती है :–** पर्यावरण शिक्षा व्यक्ति को पर्यावरण सुधारने तथा उसको भविष्य के लिए सुरक्षित रखने के लिए प्रेरित करती है।

समस्या अध्ययन को औचित्य

किसी भी कार्य को करने से पहले उसकी आवश्यकता जान लेना बहुत जरूरी है। वर्तमान काल में प्राकृतिक संसाधनों को अनियंत्रित रूप से उपयोग करने तथा उसको प्रदूषित करने के कारण पर्यावरणीय गुणवत्ता में आई ह्रास की समस्या सामने आ रही है जिससे निपटने के लिए विविध कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। अतः इसके अन्तर्गत पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना जरूरी है। जिससे विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाई जा सके अतः इससे पर्यावरण शिक्षा को एक विद्यार्थी अनिवार्य

रूप से पढ़ेगा और इसके विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकेगा। अतः पर्यावरण जागरूकता को विकसित करने में पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य रूप से पाठ्यक्रम में जोड़ने का औचित्य महसूस किया गया।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित उद्देश्य अध्ययन करने हेतु रखे गये हैं।

- पर्यावरण शिक्षा को माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से जोड़ने से विद्यार्थियों के पर्यावरण जागरूकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- पर्यावरण शिक्षा को माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से जोड़ने से सरकारी व निजि विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध के चर – अध्ययन में निम्न चर है

चरों का वर्गीकरण

स्वतंत्र चर –पर्यावरण शिक्षा

आश्रित चर– पर्यावरण जागरूकता

माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राएं

शोध की जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के लिए जयपुर शहर के दो सरकारी व दो निजी विद्यालयों का चयन किया गया है।

शोध के न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के 120 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

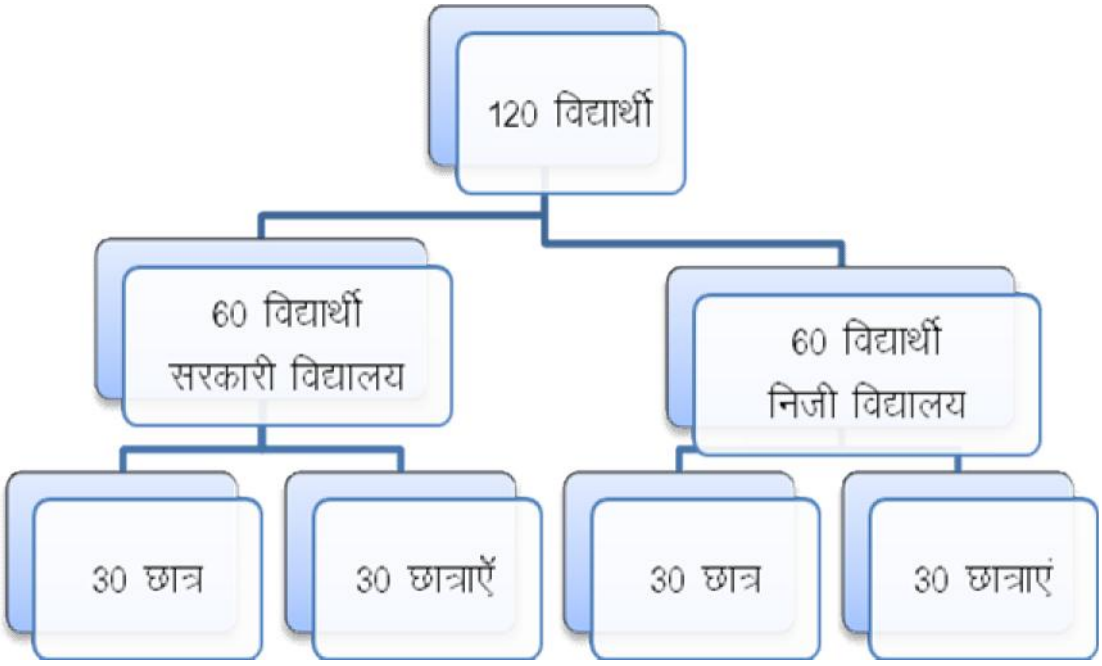

शोध के उपकरण

अध्ययन हेतु आवश्यक प्रदतों का संकलन करने के लिए एक वैध एवं विश्वश्नीय उपकरण का होना अनिवार्य है इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शोध में निम्न मानकीयकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है –

डॉ. प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित परीक्षण –एन्वायरमेन्टल अवेयरनेस एबिलिटी मेजर (E.A.M.)

शोध विधि – प्रस्ततु शोध में सर्वेक्षण विधि को प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी –

प्रदतों के विश्लेशण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी विधियां अपनाई गई है।

- मध्यमान
- प्रमाणिक विचलन
- टी–परीक्षण

शोध की परिकल्पनाएं

- पर्यावरण शिक्षा को माध्यमिक पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से जोड़ने से छात्र छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- पर्यावरण शिक्षा को माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से जोड़ने से सरकारी विद्यालय के छात्र– छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- पर्यावरण शिक्षा को माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से जोड़ने से निजीविद्यालय के छात्र– छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- पर्यावरण शिक्षा को माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से जोड़ने से सरकारी व निजीविद्यालयों के छात्रों के पर्यावरण जागरूकता पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- पर्यावरण शिक्षा को माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से जोड़ने से सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- पर्यावरण शिक्षा को माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से जोड़ने से सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र– छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध के परिसीमन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में समय व शक्ति को ध्यान में रखते हुए शोध समस्या का परिसीमन किया गया है।

- प्रस्तुत शोध कार्य राजस्थान के केवल जयपुर जिले तक सीमित है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया हैं
- प्रस्तुत शोध में सरकारी व निजी विद्यालय के केवल 120 विद्यार्थियों को न्यादर्श के लिए सम्मिलित किया गया हैं
- प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।
- प्रस्तुत शोध में केवल मानवीकृत परीक्षण का उपयोग किया गया है।

शोध के शैक्षिक निहितार्थ

कोई भी शोध प्रबंध बिना किसी उपयोग के महत्वहीन होता है। शोध कार्य का समाज या उसके किसी कारक के लिए उपयोगी होता हैं। इसके अभाव में शोध कार्य में धन तथा समय व्यय करना व्यर्थ होता है। प्रस्तुत अध्ययन से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उनके आधार पर ही इस शोध कार्य की विभिन्न क्षेत्र में उपयोगिता दिखाई देती है।

समाज के लिए

- समाज द्वारा पर्यावरण जागरूकता के प्रति सामाजिक आन्दोलन करने चाहिये।
- समाज के द्वारा पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने हेतु कार्यक्रम बनाये जाने के साथ–साथ उनका क्रियान्वयन होना चाहिये।

शिक्षा विभाग के लिए

- शिक्षा में पर्यावरण चेतना के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम समीक्षा की जानी चाहिये।
- शिक्षा में पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए पाठ्यक्रम में इस विषय को सम्मिलित किया जाना चाहिये।
- शिक्षा पर्यावरण जागरूकता के सभी पक्षो के स्वरूप को भविष्य का समुचित विचार पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना चाहिये ।

अध्यापकों के लिए

- पर्यावरण चेतना संबंधी कार्य गोष्ठी, वार्ताए, प्रशिक्षण, पद, यात्राएं, जनसम्पर्क एवं पर्यावरण दिवस आदि का आयोजन कर विद्यार्थीयों को जागरूक करना चाहिये।
- अध्यापकों द्वारा वर्तमान एवं भविष्य को ध्यान में रखकर पर्यावरण जागरूकता पर निष्पक्ष अपने विचार छात्रों को देने चाहिये।
- शिक्षक पर्यावरण के प्रति सजग रहकर विद्यार्थियों के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करे।

विद्यालयों के लिए

- विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा से संबंधित साहित्य उपलब्ध कराया जाना चाहिये।
- विद्यालयों के पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा को सम्मिलित किया जाना चाहिये।
- विद्यालय द्वारा छात्रों में पर्यावरण जागरूकता विकसित की जानी चाहिये।

अभिभावको के लिए

- पर्यावरण के प्रति जागरूकता को विकसित करने के बच्चों में साकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करें।
- बच्चों को प्रकृति के अद्वितिय रहस्यों को समझाते हुए प्रकृति के वास्तविक संतुलित रूप को बनाये रखने के लिए प्रेरित करें।

भावी शोध हेतु सुझाव

वर्तमान शोध कार्य को विभिन्न बाधकों जैसे समय, धन और मानसिक क्षमता को ध्यान में रखकर किया गया है। यदि भविष्य में इसी के समान कोई शोध कार्य किये जाते है तो निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखकर उसे और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

- प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 120 विद्यार्थियों को लिया गया है। भावी शोध में व्यापक न्यादर्श लिया जा सकता है।
- प्राथमिक कक्षाओं व उच्च प्राथमिक कक्षाओं में भी पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन किया जा सकता है।
- शिक्षित व अशिक्षित महिलाओं पर पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों पर पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- राजस्थान के अन्य जिलों में पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- विभिन्न समूहों के आर्थिक एवं सामाजिक तथा धार्मिक स्तर के आधार पर भी पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। बदलते राष्ट्रीय परिवेश में इस विषय के अन्तर्गत किये जाने वाला अध्ययन एक अनवरत प्रक्रिया है। सुझाए गए उपरोक्त सुझावों के अतिरिक्त विभिन्न पर्यावरणीय जागरूकता आधारित अनुसंधानों की तुलनात्मक प्रभावशीलता का पता लगाया जा सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में उक्त सम्पूर्ण विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से जोड़ना सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता को विकसित करने में सहायक हैं।

प्रस्तुत शोध प्रथम व लघु प्रयास है अतः इसमें अनेक कमियों का रह जाना स्वाभाविक है। अनेक समस्याओं, समयाभाव व कठिनाइयों के कारण अध्ययन व न्यादर्श छोटा ही लिया गया है। इतने छोटे न्यादर्श पर कोई भी निश्चित निष्कर्ष नहीं निकाले जा सकते है। यद्यपि इस क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों को दिशा संकेत के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। अतः प्रस्तुत शोध द्वारा पर्यावरण जागरूकता को विकसित करने की एक छोटी सी कोशिश की गई है।

♦❐♦